आनंद बख्शी के गीतों में भक्तिकालीन कवियों का प्रभाव

अशोक कुमार प्रमाणिक
शोधार्थी, हिन्दी विभाग
रांची विश्वविद्यालय, रांची

सारांश:- भक्तिकाल के कवियों की कविताओं का प्रभाव न केवल पाठकों और श्रोताओं पर पड़ा है बल्कि असाधारण व्यक्तियों पर भी पड़ा है। वह असाधारण मनुष्य कोई और नहीं है बल्कि सिने संसार के गीतकार हैं। सिने संसार में कई ऐसे गीतकार हुए हैं जिनके गीतों में हिंदी कवियों का प्रभाव दिखाई पड़ता है। इनमें से एक नाम ऐसा है जिनके लिखे गीत पचास से लेकर नब्बे दशक के बीच लोगों में गहरी छाप छोड़ा। जो उसने संसार में चार दशक तक एकछत्र राज किया। छः सौ से अधिक फिल्मों में लगभग चार हजार से अधिक गीतों की रचना की है। यहां तक की अनपढ़ लोगों से लेकर पढ़े-लिखे लोगों तक में भी उसके गीतों का प्रभाव पड़ा है, जिसे हम सिने संसार में 'गीतों का राजकुमार' की उपाधि से विभूषित करते हैं। ऐसी विभूति कोई और नहीं सिने संसार के सुप्रसिद्ध गीतकार आनंद प्रकाश जो आगे चलकर आनंद बख्शी के नाम से विख्यात हुए, जिनमें गीतों का प्रभाव संपूर्ण मानव समाज में पड़ा तथा गीतों के माध्यम से हिन्दी भाषा की सहजता, सरलता और मधुरता का परिचय दिया और हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में भी योगदान दिया है। साथ ही, उनके गीतों में भक्तिकालीन हिंदी कवियों का प्रभाव दिखाई देता है। हिंदी साहित्य के इतिहास के तीन कालखण्ड के कवियों का विशेष प्रभाव पड़ा है, जिसमें से भक्तिकालीन कवियों का प्रभाव विशेष उल्लेखनीय रहा है। हिंदी साहित्य की परंपरा अत्यंत समृद्ध और विविध विषय से परिपूर्ण है। हर समाज की अपनी-अपनी पहचान होती है। समय के साथ समाज, संस्कृति, धर्म, राजनीति और परंपरा में भी परिवर्तन दिखाई देता है जिसे लोगों की मानसिकता प्रभावित होती है। हिंदी कविता के भाव भारतीय जनमानस को गहराई से प्रभावित करता है। जिसमें प्रेम, भक्ति, विद्रोह, राष्ट्रवाद, मानव-मूल्य, भावनात्मक अनुभूति, सामाजिक सरोकारों और मानसिक उत्पीड़न की गहरी छाप देखने को मिलती है। जिसे अपनी अनुभूति से हिन्दी गीतों को ऊंचाई तक पहुँचाने में विशेष योग दिया है।

हिंदी साहित्य का इतिहास हजार वर्षों का इतिहास है। जिसमें विभिन्न कालक्रम में विविध विषय के कवियों का आगमन हुआ। भक्तिकाल जिसे हिन्दी साहित्य का स्वर्णिम युग कहते हैं। जहाँ कबीरदास, जायसी, सूरदास और तुलसीदास इस युग के आधार स्तम्भ हैं। जिन्होंने अपने समयानुकूल सामाजिक भाव, दर्शन, प्रेम, भक्ति, पीड़ा, वेदना, सहानुभूति, वात्सल्य, परिस्थिति, सांस्कृतिक मानव मूल्य आदि विषय पर गहन लेखनी की है, जिनकी कविताओं से समाज के लोगों को एक दिशा और दृष्टि मिली है। हिंदी सिने संसार का इतिहास लगभग तिरानवे वर्षों का इतिहास है। डॉ. टी. शशिधरन ने सिनेमा संसार के सम्बन्ध में एक उद्धरण दिया है जिसमें पहली फिल्म के बारे में बताते हुए लिखा है- "14 मार्च 1931 को मैजस्टिक सिनेमा में भारत की पहली पूरी लम्बाई की बोलती फिल्म 'आलम आरा' प्रदर्शित हुई।"[1] हिन्दी चित्रपट का यही पहली सवाक फिल्म है। जिसमें विभिन्न प्रकार के फिल्मों में समाज के विविध विषय को सम्मिलित कर समाज के उत्थान में योगदान दिया है। गीतकारों ने अपनी विविधतापूर्ण शैली से हिंदी गीतों को एक नई उड़ान दी है। अपनी लेखन शैली से समाज के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिन्दी गीत परम्परा में विभिन्न शैली के गीतकार हुए हैं जिन्होंने अपनी लेखनी से सबको प्रभावित किया है। ऐसे कई नाम हमारे फ़िल्म संसार में मिलता है और कई शैलियाँ भी मिलती हैं जिसमें से गीतकारों की हिन्दी-उर्दू शैली ने सभी श्रोताओं को प्रभावित की है। इसी लेखन शैली के कुशल चितेरे हैं- आनंद बख्शी। इन्होंने इस शैली का प्रयोग कर अपने गीतों में सजीवता और जीवंतता प्रदान की है। जिससे उनके गीतों में विषय की गहराई, साहित्यिक बोध और काव्यात्मक सौंदर्य का अनूठा संगम देखने को मिलता है। साथ ही, उनके गीतों में भाषा का चमत्कार, भावनात्मक गहराई और नैतिकता का समावेश मिलता है जो भारतीय कविता और साहित्य से जुड़ा हुआ है।

भक्ति काल का समय समाज के नवोत्थान का समय था। भक्ति काल का समय भारतीय समाज और संस्कृति के उत्थान का समय था। इससे पूर्व समाज और संस्कृति इस्लामी संस्कृति से प्रभावित थी परंतु भक्ति कालीन कवियों ने भारतीय समाज और सनातन संस्कृति को नवजीवन देकर प्रतिष्ठित किया जिसमें ईश्वर के निर्गुण और सगुण रूप की उपासना की गई है। संपूर्ण भक्ति काल का समय हिंदी साहित्य के लिए श्रद्धा,

भक्ति, आस्था, विश्वास और दर्शन का रहा है। भक्ति काल के क्रमशः इन नैतिक मूल्यों का प्रभाव न केवल गीतकारों पर पड़ा बल्कि अन्य क्षेत्रों में भी इसका प्रभाव दिखाई पड़ता है। आनंद बख्शी एक साहित्यिक गीतकार है जिसके गीतों में भाषा की मधुरता और साहित्य के तत्व मौजूद है। आनंद बख्शी के गीतों में विशेषकर भक्तिकालीन प्रमुख कवियों का प्रभाव उल्लेखनीय रहा है। आनंद बख्शी के गीतों में भक्तिकालीन कवियों का प्रभाव गहराई और प्रभावशाली रूप में मिलता है। भक्तिकालीन कवियों का प्रमुख उद्देश्य न केवल काव्य रचना का था बल्कि ईश्वर के प्रति नैतिक, सामाजिक, माधुर्य, प्रेम, श्रद्धा, समर्पण और भक्ति के स्वरूप को प्रकट करना था। जिसका प्रभाव आनंद बख्शी के गीतों में स्पष्ट दिखाई पड़ता है। इन कवियों की तरह आनंद बख्शी ने अपने गीतों में नैतिकता, सामाजिक बोध, माधुर्यता, प्रेम, भक्ति, मानव मूल्य और जीवन की गहरी सच्चाइयों को व्यक्त किया है। आनंद बख्शी के गीतों में अध्यात्म, गहरी आस्था और भक्ति के तत्व साफ दिखाई देते हैं। भक्तिकालीन कवियों में से कबीर, जायसी, सूरदास, मीराबाई, तुलसीदास और रहीमदास की कविताओं का प्रभाव आनंद बख्शी के गीतों में दिखाई देता है। उनकी रचनाओं से प्रेरित होकर आनंद बख्शी ने भक्ति और प्रेम को एक नया दृष्टिकोण देकर गीतों को एक नई उड़ान दी है। उनके गीतों में भक्ति और जीवन की गहराई दिखाई देती है, जहां ईश्वरीय प्रेम दिखाई देता है जिसके प्रति समर्पण और आत्मा की खोज जैसे तत्त्व उभरकर सामने आते हैं।

कबीरदास का प्रभाव :- आनंद बख्शी के गीतों में कबीर के रहस्यवाद गुण का प्रभाव दिखाई देता है। क्योंकि कबीरदास निर्गुणवादी कवि हैं जिनकी रचनाओं में निर्गुण भक्ति का प्रबल भाव छिपा है। जहां उन्होंने ईश्वर के साकार रूप को छोड़ उसके निराकार और अनंत रूप को माना है। कबीर निर्गुण ब्रह्म की उपासना करते हुए अपनी रचनाओं में कहते हैं कि

दुलहिनी गावहु मंगलचार,
हम घरि आए हो राजा राम भरतार..... [2]

इस दोहे में कबीर ने निर्गुण ब्रह्म के स्वरूप को बताया है जो तारा नछत्र के रूप में विद्यमान है जो अत्यंत विशाल हैं। इस काव्य में ईश्वर के प्रति ऐसी हि असीम श्रध्दा और विश्वास दिखता है। इसका प्रभाव आनंद बख्शी के इस गीत में दिखाई देता हैं।

मैंने पूछा चाँद से कि देखा है कहीं,
मेरे यार-सा हंसी
चाँद ने कहा- चांदनी की कसम,
नहीं.....नहीं..... नहीं...
मैंने ये हिजाब तेरा ढूंढा
हर जगह शवाब तेरा ढूंढा
कलियों से मिसाल तेरी पूछी
फूलों में जवाब तेरा ढूंढा..... [3]

1980 में संजय खान द्वारा निर्देशित फिल्म 'अब्दुल्ला' में संगीतकार राहुल देव बर्मन के संगीत-निर्देशन में आनंद बख्शी ने इस गीत में सूफी प्रेम पध्दति का समाविष्ट किया है तथा निर्गुण निराकार रूप की अभिव्यंजना की गई है। इसमें आनंद बख्शी ने उस निराकार निर्गुण ब्रह्म को चाँद ,फूल जैसे रूपक के माध्यम से उस अज्ञात प्रियतम को खोजने का प्रयत्न किया। परन्तु इन रूपक -प्रतीकों से नायिका के रूप को खोजने की जिज्ञासा का अद्‌भुत वर्णन किया है। यथा संभव इस गीत में नायिका एक आधार मात्र है जबकि गीतकार की मूल भावना निर्गुण निराकार ब्रह्म की खोज है जो कबीर की निर्गुणवादी विचारधारा के प्रतीक है। इस गीत में निर्गुण ब्रह्म की उपासना की गई है जो कबीर की निर्गुणवादी परंपरा से प्रभावित है। कबीर के निर्गुण भक्ति के सिध्दांतों से पूर्णत: प्रेरित है, जिसमें ईश्वर को किसी विशेष रूप में देखने के बजाय उसके अनंत स्वरूप को स्वीकार किया है। जो कबीर की निर्गुण भक्ति से मेल खाता है। इस तरह के कई गीत आनंद बख्शी ने अपनी कलम की धार से उतारी हैं।

जायसी का प्रभाव:- आनंद बख्शी के गीतों में जायसी के अज्ञात प्रेम की अनुभूति का प्रभाव दिखाई पड़ता है। जायसी प्रेममार्गी शाखा के प्रवर्तक कवि हैं। जिनकी रचनाओं में लौकिक प्रेम से आध्यात्मिक प्रेम की पराकाष्ठा दिखाई देती है। सम्पूर्ण सूफी काव्य 'इश्क-ए-मजाजी' {लौकिक प्रेम} से 'इश्क-ए-हकीकी' {आध्यात्मिक प्रेम } का गतिशील प्रेम प्रधान काव्य है। जायसी की मान्यता है कि इश्क मजाजी {लौकिक प्रेम} के द्वारा इश्क हकीकी {ईश्वरीय प्रेम} को प्राप्त किया जा सकता है। रत्नसेन की प्रेम पद्धति इसी प्रकार की है। रत्नसेन, पद्मावती के रूप

सौन्दर्य पर मोहित होकर नागमती का त्यागकर सिंहलद्वीप की और निकल जाता है जो इस पंक्ति से यह स्पष्ट होता हैं –

राजा बाउर बिरह बियोगी। चेला सहस तिस संग जोगी।।

पद्मावति के दर्शन आसा। दंडवत कीन्ह मंडप चहुँ पासा।। [4]

इस पंक्ति में पद्मावती को देखने की व्याकुलता रत्नसेन में दिखाई पड़ती है जो मन की लालसा उन्हें खींचकर सिंहलद्वीप ले जाती है। आनंद बख्शी के गीतों में इश्क मजाजी {लौकिक प्रेम} से होकर इश्क हकीकी (ईश्वरीय प्रेम) की झलक दिखाई देती है। एल. वी. प्रसाद द्वारा निर्मित और निर्देशित 1969 में बनी फिल्म भाषा की नाट्य फिल्म – 'जीने की राह' है। इस फिल्म में संगीतकार जोड़ी लक्ष्मीकान्त-प्यारेलाल के संगीत-निर्देशन में आनंद बख्शी ने एक गीत लिखा ,जिसके बोल हैं;-

उनकी नज़र का जिसने नज़ारा चुरा लिया,
उनके दिलों का जिसने सहारा चुरा लिया,
उस चोर की तलाश में सारे निकल पड़े,
चंदा को ढूंढने सभी तारे निकल पड़े,
गलियों में वो नसीब के मारे निकल पड़े..... [5]

जिसमें 'चंदा' शब्द ईश्वरीय प्रेम का प्रतीक है और 'तारे' लौकिक प्रेम का। चंदा यानि ईश्वरीय प्रेम की तलाश में तारे यानि लौकिक प्रेम बाँधाओं को चीरते हुए अनायास निकल पड़ते है। इस गीत में प्रेम की सार्थक अनुभूति स्पष्ट दिखाई देती है। आनंद बख्शी साहब ने इसकी गह्नता के साथ अभिव्यंजना की है। इस गीत में ईश्वर के प्रति गहरी आस्था, प्रेम और समर्पण की भावना व्यक्त की गई है। जिसमें निर्गुण, निराकार ब्रह्म की प्रतीकात्मक अभिव्यंजना हुई है। चाँद उस नक्षत्र का प्रेम प्रतीक है जिसे ढूंढने के लिए तारे रूपी आध्यात्मिक प्रतीक निकल पड़ते हैं। यह गीत जायसी की सूफी विचारधारा से प्रभावित है।

सूरदास का प्रभाव :- आनंद बख्शी के गीतों में सूर के वात्सल्य प्रेम का प्रभाव दिखाई पड़ता है। सूरदास कृष्ण भक्ति शाखा के प्रवर्तक कवि हैं जो कृष्ण के सगुण रूप की अभिव्यक्ति की है। सूरदास का काव्य संपूर्ण साहित्य का अमूल्य निधि है। सूरदास वात्सल्य और प्रेम के अद्वितीय कवि हैं। यह वास्तविकता है कि सूर ने जैसी वात्सल्यता का वर्णन किया है वैसा कोई अन्य कवि ने नहीं। सूरदास की रचनाओं में कृष्ण के सगुण रूप के प्रति प्रेम विशेष कर उनके बालरूप और गोपियों के साथ उनके प्रेम का गहरा और अनूठा चित्रण मिलता है। जिसमें कृष्ण का वात्सल्य प्रेम झलकता है। सूरदास कई पदों में वात्सल्य प्रेम को दिखाते हैं जिसमें से एक दृष्टव्य है -

मैया कबहिं बढ़ेगी चोटी?
किती वार मोहिं दूध पियत भई, यह अजहूँ है छोटी।
तू जो कहति 'बल' की बेनी ज्यों ह्वैहै लांबी मोटी ।। [6]

इसमें वात्सल्य का विलक्षण प्रभाव दिखाई देता है। जिसमें कृष्ण अपनी मैया यशोदा से कहता है कि माँ मेरी चोटी कब बढ़ेगी? यहाँ कृष्ण के बालपन का सजीव चित्रण हुआ है, जिसमें बाल कृष्ण अपनी छोटी चोटी को देख मायूस होकर वात्सल्य भाव से यशोदा से कहता है- माँ मैं कितने समय से दूध पी रहा हूँ लेकिन मेरी चोटी आज भी छोटी ही है। तुम तो कहती थी कि बलराम की चोटी की भांति लम्बी और मोटी होगी! यहाँ प्रेम और वात्सल्य का गहरा भाव व्यक्त किया है। सूरदास के प्रेम और वात्सल्य का प्रभाव आनंद बख्शी के गीतों में भी दिखाई पड़ता है। आनंद बख्शी के गीतों में भी इस प्रकार का वात्सल्य और प्रेम पूर्ण भक्ति का अनूठा चित्रण मिलता है। संगीतकार जोड़ी लक्ष्मीकांत प्यारेलाल के संगीत-निर्देशन में 'राजा और रंक' फिल्म में आनंद बख्शी ने एक गीत लिखा, जिसमें वात्सल्य प्रेम का विशद वर्णन मिलता है जो सूरदास के कृष्ण-यशोदा संबंध के वात्सल्य प्रेम से मेल खाता है। सूरदास ने कृष्ण और उनके प्रेम की नादानी और भावुकता को वात्सल्य के साथ व्यक्त किया है। वैसे ही आनंद बख्शी इस गीत में माँ के प्रति नायक का प्रेम, श्रद्धा और समर्पण का भाव झलकता है :-

तू कितनी अच्छी है, तू कितनी भोली है,
प्यारी-प्यारी है, ओ माँ, ओं माँ, ओं माँ, ओं माँ
यह जो दुनिया है, वन है कांटो का'
तू फुलवारी है, ओ माँ, ओं माँ, ओं माँ, ओं माँ
दुखन लगी है माँ तेरी अखियां
मेरे लिए जागी है तू सारी सारी रतिया
मेरी निंदिया पे अपनी निंदिया भी तूने वारी है

ओ माँ, ओं माँ, ओं माँ, ओं माँ
मां बच्चे की जाँ होती है
वो होते हैं किस्मत वाले जिनकी मां होती है
कितनी सुंदर है कितनी शीतल है
न्यारी-न्यारी है ओ माँ, ओं माँ, ओं माँ, ओं माँ..... [7]

आनंद बख्शी ने इस गीत में माँ और बच्चे के बीच एक ऐसा चित्र खींचा है जो सूरदास की वात्सल्यता के समक्ष है। इस गीत में माँ के प्रति जो श्रद्धा, प्रेम और वात्सल्य दिखाया है। वह सूरदास के वात्सल्य श्रद्धा की ही एक दृष्टि और घटना है। आनंद बख्शी ने इस गीत में गहरा और मासूम प्रेम को दिखाया है, जिसमें माँ के होने और न होने से बच्चों में क्या प्रभाव पड़ता है, इसे भी दिखाने का प्रयत्न किया है। साथ ही, माँ और बच्चे के बीच का संबंध ईश्वर और भक्त के बीच के संबंध जैसा पवित्र और आत्मिक बताया है। आनंद बख्शी के कई ऐसे गीत हैं जिसमें वात्सल्य प्रेम को दिखाया गया है और साथ ही, ईश्वर भक्ति की भी चर्चा की गई है। सुभाष घई के निर्माण और निर्देशन में सन् 1993 में एक प्रसिद्ध फिल्म बनी- 'खलनायक'। इस फिल्म में आनंद बख्शी ने एक गीत लिखा जिसमें बच्चा और माता के बीच के घनिष्ठ संबंध को दिखाया गया। साथ ही, ईश्वर और माँ के बीच का जो संबंध होता है उसे इस गीत के माध्यम से प्रकाशित किया गया है-

ऐसा नटखट था घनश्याम तंग था सारा गोकुलधाम
मगर यशोदा कहती थी झूठे हैं यह लोग तमाम
मेरे लाल को करते हैं सारे यूँ ही बदनाम
ओं माँ तुझे सलाम..... [8]

इस गीत में यह बताने का प्रयत्न किया गया है कि संतान चाहे नटखट ही क्यों न हो या बुरा ही क्यों न हो उसकी नजर में सब बच्चे की तुलना में उसका बेटा सबसे सुन्दर और सुशील होता है। इस तरह के कई गीत मिलते हैं जिसमें संतान और माँ-बाप के बीच के सम्बन्ध को बताया गया है। 1969 में बनी फिल्म 'आराधना' में 'चंदा है तू मेरा सूरज है तू,ओ मेरी आंखों का तारा है तू' गीत में आनंद बख्शी ने एक माँ की ममता को अपने बच्चों पर भावनात्मक रूप में दिखाया है। इसमें अपने बच्चों पर एक माँ अपनी ममता की गहराई दिखाते हुए अपने बच्चों को गगन के नक्षत्र तारा, चाँद और सूरज के रूप में देखती है। जिसे देखकर वह सारा जीवन का सहारा बना लेती है और अपने बच्चों के स्नेह से वह संसार में सबसे सुखमय जीवन व्यतीत करती है। इसमें माँ की करुण पुकार और ममता उमड़ती दिखाई पड़ती है, जिसमें सूर की वात्सल्यता का प्रभाव दिखाई देता है।

मीराबाई का प्रभाव :- आनंद बख्शी के गीतों में मीरा की प्रेम की वेदना और भक्ति की पराकाष्ठा का प्रभाव उल्लेखनीय है। मीराबाई कृष्ण भक्ति शाखा के सुप्रसिद्ध कवयित्री है। जिसकी उपासना माधुर्य की है। इन्होंने अपने इष्टदेव कृष्ण को ईश्वर कम और प्रीतम या पति के रूप में अधिक स्वीकार किया है। संपूर्ण सिने संसार के गीत इसी रूप पर टिका हुआ है। गीतों के केंद्र में नायक-नायिका या प्रियतम-प्रेयसी ही होते हैं। मीरा के काव्य में प्रेम, भक्ति, समर्पण और श्रद्धा का गहरा प्रभाव था। मीरा के इस गीत में प्रेम, टीस और समर्पण का भाव दिखाई पड़ता है-

हेरो मैं तो प्रेम दीवाणी, मेरो दरद न जानै कोइ।
घायल की गति घायल जानै, की जिण लाई होइ।।
जौहरी की गति जौहरी जानै, की जिण जौहरि होइ।
सूली ऊपर सेज हमारी सोवण किस बिध होइ।। [9]

इस गीत में प्रेम की अभिव्यंजना दिखाई देती है जहाँ प्रेमिका अपने प्रेम में दीवानी हो चुकी है परंतु उसके हृदय में एक गम्भीर टीस है जो अपने प्रीतम के सामने प्रकाशित नहीं करना चाहती है। बल्कि इस टीस को अपने हृदय में छिपाकर अपने तक सीमित रखना चाहती है पर टीस इतनी गम्भीर रूप लेकर आती है कि उसे गीतों के रूप में बयाँ करना पड़ता है। मीरा कहती है- मेरे हृदय की पीड़ा कोई जान नहीं सकता है। घायल की हालत तो घायल ही जान सकता है जिसने कभी चोट ना खाई हो वह उसे महसूस नहीं कर सकता। जिस प्रकार जौहरी के जौहर को जौहरी ही पहचान सकता है, बशर्ते की कोई जौहरी हो। इसमें प्रेम की तड़प, पीड़ा और विरह वेदना की असीम अभिव्यक्ति हुई है। इस तरह की अभिव्यक्ति आनंद बख्शी के गीतों में बहुत अधिक गहराई से मिलती है। 1966 में मोहन सहगल द्वारा निर्देशित फिल्म 'देवर' में संगीतकार रोशन के संगीत-निर्देशन में एक गीत लिखा, जिसमें मीराबाई का प्रभाव दिखाई पड़ता है। गीत के बोल हैं-

दुनिया में ऐसा कहाँ सबका नसीब है
कोई कोई अपने पिया के करीब है
चाहे बुझा दे कोई दीपक सारे
प्रीत बिछाती जाए राहों में तारे
प्रीत-दीवानी की कहानी भी अजीब है
दुनिया में ऐसा कहाँ सबका नसीब है.... [10]

इसमें पिया मिलन की विरह वेदना झलक कर सामने आई है। कोई अपने पिया के संग है और कोई पिया के विरह में दिन गिन रहा है। इस गीत में नायिका के अधूरे प्रेम की अभिव्यंजना हुई है परंतु यहाँ नायिका के जीवन में ईश्वर या किसी पिया के बिना अधूरेपन का जो भाव है वह मीरा की माधुर्य भक्ति से प्रेरित लगता है। मीरा की तरह यहाँ भी प्रेम की गहराई है।

तुलसीदास का प्रभाव :- कविकुल शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास हिंदी साहित्य का इतिहास में रामाश्रयी शाखा के प्रवर्तक कवि हैं। विभिन्न रसमयी रामकथा तुलसीदास ने अनेक प्रकार की रचनाओं में कही है। उनकी रचनाओं में भगवान राम के प्रति गहरी श्रद्धा, भक्ति तथा उनके आदर्श जीवन मूल्यों का गहन वर्णन मिलता है। इसमें राम के सौंदर्य तथा रूप पर सारे संसार के लोग मोहित हैं। लोगों की आँखें राम के उस रूप सौन्दर्य को देखने के लिए तरस गईं हैं। राम के सगुण ब्रह्म, निराला रूप और सौंदर्य के संपूर्ण गुणों से युक्त छटाओं को देखने के लिए लोगों की व्याकुलता दिखाई पड़ती है। इस गीत में 'रामचरितमानस' के एक दोहे का प्रभाव दिखाई देता है-

नारी बिलोकहिं हरषि हियँ निज-निज रुचि अनुरूप। [11]

जनकपुर की गलियों में राम के अद्‌भुत सौंदर्य को देखकर स्त्रियों के हृदय में जो प्रेम उमड़ा, उसी का अद्‌भुत वर्णन किया गया है। राम के उस रूप को देखकर वहाँ की नारियाँ अपनी अवस्था के अनुरूप अपनी भावनाओं से भगवान राम के रूप का दर्शन किया है। तुलसी के राम की भांति आनंद बख्शी ने भी राम भक्ति पर गीतों की रचना की है। आनंद बख्शी के गीतों में तुलसी के राम का प्रभाव दिखाई देता है। उनके गीतों में तुलसीदास की राम भक्ति का प्रभाव कई गीतों में दिखाई पड़ता है जिसमें भगवान राम के सगुण रूप का वर्णन तथा राम के प्रति आस्था और भक्ति का अनुपम चित्रण मिलता है। 1979 में निर्मित फिल्म 'सरगम' में लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल के संगीत-निर्देशन में आनंद बख्शी ने एक गीत लिखा, जिसे मोहम्मद रफी ने स्वर देकर उस गीत को अमर कर दिया।

राम जी की निकली सवारी
राम जी की लीला है न्यारी
एक तरफ लक्ष्मण एक तरफ सीता
बीच में जगत के पालनहारी,
राम जी की निकली सवारी
धीरे चला रथ ओ रथ वाले
तोहे खबर क्या ओं भोले-भाले
एक बार देखो जी ना भरेगा
सौ बार देखो फिर जी करेगा
व्याकुल पड़े हैं कब से खड़े हैं
दर्शन के प्यासे सब नर-नारी,
राम जी की निकली सवारी.... [12]

रहीम का प्रभाव :- तुलसीदास के समकालीन नीतिशास्त्र के ज्ञाता तथा तुलसी के घनिष्ठ मित्र रहीमदास राम के अनन्य भक्त थे। जिनकी रचनाओं में भक्ति, जीवन की गहरी अनुभूति और सामाजिक समन्वय के साथ ईश्वर के प्रति गहरी आस्था का भाव दिखाई पड़ता है। साथ ही, उनकी रचनाओं में नीतिपरक रचनाएं भी मिलती हैं। जिसमें रहीम प्रेम को परिभाषित करते हुए लिखते हैं-

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।
टूटे से फिर ना जुड़े, जुड़े गांठ पड़ जाय।। [13]

इसमें प्रेम के साथ ही जीवन की गहरी समझ का संदेश दिया गया है। रहीम प्रेम को सबसे नाजुक वास्तु मानते हैं। प्रेम बहुत ही कोमल और मूल्यवान वस्तु होने के साथ ही कच्चे धागे के समान होता है। आनंद बख्शी के गीतों में रहीम के सामाजिक बोध का प्रभाव दिखता है। रवि टंडन द्वारा निर्देशित 1974 की फिल्म 'मजबूर' में संगीतकार जोड़ी लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल के संगीत-निर्देशन में आनंद बख्शी ने गीत लिखा, जिसमें रहीम के उपयुक्त दोहे का प्रभाव एवं भाव देखने को मिलता है। जो इस गीत की पंक्ति से स्पष्ट होता है-

रूठे रब को मनाना आसान है
रूठे यार को मनाना मुश्किल है
सूने घर को बसाना आसान है
सूने दिल को सजाना मुश्किल है
रूठे रब को मनाना आसान है..... [14]

इस गीत में आनंद बख्शी ने उसे समय की स्थिति में समाज के लोगों में विघटन की भावना को चुनौती रूप में स्वीकार कर, इस गीत के आधार पर संबंध में एकता और अखंडता के साथ सामाजिक बोध के चिंतन की झलक को शामिल किया है। जो रहीम के सामाजिक बोध से प्रेरित है। रहीम ने अपने दोहे में जीवन और धर्म के बीच संतुलन और समन्वयता की बात कही है। जो आनंद बख्शी के उपर्युक्त गीत में देखा जा सकता है। आनंद बख्शी के गीत में ईश्वर और धर्म के प्रति अनूठी आस्था का भाव प्रकट होता है।

निष्कर्ष :- निष्कर्षतः हम कह सकते है कि आनंद बख्शी के गीतों की कामयाबी में उनकी बोलचाल की आत्मीय और रोचक शैली का काफी योगदान है। उन्होंने भक्ति, प्रेम, विरह, वेदना, प्रकृति और समाज से जुड़े भावों को समकालीन संदर्भ में प्रस्तुत किया है। अपने गीतों में साहित्यिक मूल्यों की गहराई इन्ही कवियों की दृष्टि से पाई है। भक्तिकालीन कवियों के प्रभाव ने उनके गीतों को न केवल फ़िल्मी दुनिया में लोकप्रिय बनाया बल्कि उन्हें साहित्यिक दृष्टिकोण से भी समृद्ध किया। संसार और साहित्य दोनों ही स्थान पर समान रूप से प्रसिद्धि दिलाया। उनके गीतों में न केवल भक्ति और प्रेम भाव दिखाई देता है बल्कि जीवन का गहरा अनुभव और आत्मिक जीवन बोध की गहराई भी दिखाई देती है। आनंद बख्शी ने अपने गीतों में भक्ति की भावना को एक नए और समसामयिक रूप में प्रस्तुत कर समाज को एक नई दृष्टि प्रदान की है। समाज के लोगों में भक्ति और प्रेम के साथ नैतिकता को उसके हृदय में जागृत किया। जिससे उनके गीतों में आध्यात्मिक गहराई और वास्तविकता का अनुभव मिलता है। परतंत्र भारत के पश्चात् लोगों में अनेकता और जाति-पाति, छुआछूत की भावना चरम शिखर पर था। ऐसी स्थिति में आनंद बख्शी अपने गीतों में इन विषय को केंद्र में रखकर समाज के उत्थान और जातिवाद का खंडन करने के लिए भक्तिकालीन कवियों की भावनाओं का सहारा लिया। और समाज को एक सूत्र में पिरोने का काम किया। गीतकार आनंद बख्शी ने भक्ति काव्य की परंपरा को आधुनिक फिल्मी गीतों में बड़ी ही सरलता और संवेदनशीलता के साथ व्यक्त किया है।

सन्दर्भ सूची :-

1. शशिधरन, डॉ. टी. -सिनेमा के चार अध्याय, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2014, पृष्ठ संख्या-41
2. बख्शी, राकेश आनंद - नग्में किस्से बातें यादें, अद्विक पब्लिकेशन प्रा. लिमिटेड पटपड़गंज, दिल्ली, प्रथम संस्करण-2022, पृष्ठ संख्या- 127
3. दास, डॉ. श्यामसुन्दर, वैभव लक्ष्मी प्रकाशन,कमच्छा, वाराणसी, नवीन संस्करण, पृष्ठ संख्या-135
4. बख्शी, आनंद - मैं शायर बदनाम, संपादक-विजय अकेला, राजकमल पेपरबैक्स दरियागंज, नई दिल्ली, 2023, पृष्ठ संख्या- 186
5. वही, पृष्ठ संख्या- 43
6. वही, पृष्ठ संख्या- 222
7. वही, पृष्ठ संख्या- 46
8. वही, पृष्ठ संख्या- 146
9. शुक्ल, रामचंद्र-भ्रमरगीत सार, लोकभारती प्रकाशन, गाँधी मार्ग, इलाहाबाद, संस्करण-2009, पृष्ठ संख्या- 21
10. तुलसीदास, गोस्वामी - रामचरितमानस, गीता प्रेस गोरखपुर, बालकाण्ड दोहा संख्या- 241
11. शुक्ल, आ. रामचंद्र (सं.) - जायसी ग्रंथावली, मलिक एंड कम्पनी चौड़ा रास्ता, जयपुर, प्रथम संस्करण-2011, पृष्ठ संख्या- 56

12. कुलश्रेष्ठ, स्वामी आनंद- रहीम के दोहे, डायमंड पॉकेट बुक (प्रा.) लि., इंडस्ट्रियल एरिया,फेज-2, नई दिल्ली, संस्करण-2014, पृष्ठ संख्या-17
13. मीरा-मीरा वाणी, राजकमल प्रकाशन दरियागंज , नई दिल्ली, संस्करण-2004, पृष्ठ संख्या-26
14. https://www.bhajanganga.com/mobile_bhajan/lyrics/id/1097/title/tu-kitni-achhi-hai-tu-kitni-bholi-hai-pyari-pyari-hai-o-maa
तू कितनी अच्छी है, तू कितनी भोली है..... राजा और रंक (फ़िल्म-1968)